शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जैन रामायणों का साहित्य में योगदान

डॉ.अनुपमा छाजेड़
उमिया गर्ल्स कॉलेज
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

राम के चरित्र को लेकर लिखे गये साहित्य की एक बहुत लम्बी परंपरा है। रामकथा का प्रारंभ वाल्मीकि रामायण से होता है। जिसकी रचना ईसा की कई शताब्दियों पूर्व हो चुकी थी। वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु तथा उसके महानायक ने परवर्ती कवियों का मन इतना आकर्षित किया कि उससे प्रेरित होकर केवल संस्कृत साहित्य में ही नहीं भारत की अन्य भाषाओं में तथा सिर्फ वैष्णव धर्म में ही नहीं दूसरे सभी धर्मो जैन, बौद्ध, ईसाई आदि में भी रामायण कथासंबंधी अनेक ग्रंथों की रचना हुई। फादर कामिल बुल्के ने विश्व में उपलब्ध रामायणों का गहन अध्ययन किया। इन रामायणों में पात्रों की समानता के साथ कथा सूत्र परिवर्तित दिखाई देते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में जैन रामायणों का साहित्य में योगदान का विवेचन किया गया है।

प्रस्तावना

जैनाचार्यो ने अपनी आत्मसाधना से बचे हुए समय में अनेक साहित्यिक कृतियों का सृजन किया है तथा अपनी विलक्षण साहित्य प्रतिभा का परिचय दिया है। यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि जैनाचार्य द्वारा प्रणित उत्कृष्ट साहित्यकृतियों को सिर्फ आध्यात्मिक साहित्य मानकर छोड दिया गया और साहित्यिक दृष्टि से उनका मूल्यांकन नहीं किया गया। इन साहित्यिक कृतियों का अन्य चर्चित महाकाव्यों रचनाकारों सूर, तुलसी, कबीर आदि के कृतित्व के समान ही निष्पक्ष मूल्यांकन किया जाये जिससे उनकी कृतियों के साहित्यिक सौष्ठव से हिन्दी जगत सुपरिचित हो सके।

डॉ. वाचस्पति गेरोला ने अपनी पुस्तक 'संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' के पृष्ठ क्रमांक 155 पर जैन साहित्य पर अच्छी दृष्टि डाली है। वे कहते हैं, "भारत में कथाएँ केवल कौतुकमयी प्रवृति को चरितार्थ करने के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षण के लिएभी प्रयुक्त की जाती थी और यही कारण है कि ब्राह्मणों ने, जैनियों ने, बौद्धों ने समान भाव से साहित्य के इस अंग का परिवर्धन और उपवृहण किया है। बौद्धों के जातक साहित्य के इतिहास में तथा कला के संवर्धन मैं विशेष महत्त्व रहा है। कहानी लिखने मैं जैनियों को शायद ही कोई पराजित कर सके। कहानी, उपन्यास सभी में जैनाचार्यो को अग्रणी कहा जायेगा। भारतीय कथा-साहित्य में राम कथा का अस्तित्व बहुत प्राचीन है : वेद, पुराण, आरण्यक और उपनिषद जितने भी भारतीय साहित्य के प्राचीनाम ग्रन्थ हैं, उन सबमें सर्वत्र रामकथा की व्यापकता वर्तमान है। बौद्ध और जैन साहित्य में राम कथा को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। जैन कवि विमलसूरि रचित 'पउमचरिय' प्राकृत भाषा का रामचरित संबंधी आद्यग्रन्थ है। इसके बाद संस्कृत में रविषेण की 'पद्मपुराण' की रचना हुई। फिर स्वयंभू की अपभ्रंश पुस्तक 'पउमचरिउ' और फिर अनेक जैन रामायणों की रचना हुई,

परन्तु संख्या को देखते हुए ही हमें आश्चर्य होता है कि जैनाचार्यों ने सिर्फ रामकथा पर ही हिंदी साहित्य को कितनी अधिक कृतियों से परिचय कराया है।

सभी के मतों में थोड़ा-थोड़ा अंतर भी है फिर भी हम कह सकते हैं कि सभी ने राम को मर्यादा पुरूषोत्तम सिद्ध किया है। अत: हिन्दी साहित्य में जैनाचार्यो ने अमूल्य धरोहर अनगिनत जैन रामायणों के रूप में दी है। अब हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसे संजोकर रखें, उनका अध्ययन व मूल्यांकन करें क्योंकि इनका अपना साहित्यिक महत्व है। उनकी प्रमुख विशेषता है कि उनमें सिर्फ राम, लक्ष्मण, भरत आदि का वर्णन ही नहीं मिलता है। राम कथा के आधार व उसके माध्यम से इसमें भगवान महावीर, राजा श्रेणिक्, कुलकर, ऋषभदेव, राजा श्रेयांस और सोम भरत चक्रवर्ती बाहुबली, अजीतनाथ भगवान, सगर चक्रवर्ती, भावन वणिक, सहस्त्रनयन तथा पूर्णधन, आवलिं तथा चन्द्र, रम्य, भीम, सुभीम, मेघवाहन, सगर के पुत्र,महारक्ष, विद्याधर, राजा श्रीकंठ, विद्युत्केश , किंष्किन्ध और अन्ध्रकरूढि, माली-सुमाली, राजा सहस्रार, इन्द्र विद्याधर, दशानन, भानुक्रर्ण, विभीषण, मन्दोदरी, सुर सुन्द्रर, इन्द्रजीत, बाली, विराधित, सुग्रीव, साहसगति, राजा वसु, नारद पर्वत,नारद, मरूत्व, सुमित्र और प्रभव, राजा मधु, नलकूबर, कुलकान्ता, अनन्त बल मुनिराज, सहस्त्रभट पुरूष, राजा महेन्द्र, अंजना-पवनंजय, हनुमान, वरूण, चौबीस तीर्थकर, बारह चक्रवर्ती, शांतिकुंथु , सुभूम चक्रवर्ती,महापद्य चक्रवर्ती, जयसेन चक्रवर्ती, ब्रहमदत्त चक्रवर्ती, नौ बलभद्र, नौ नारायण, नौ प्रतिनारायण, आठवें बलभद्र, राम, मुनिसूव्रत भगवान, वज्रब्राहु, कीर्तिधर मुनि, सूकौशल मुनि, हिरण्यगर्भ, मांसभक्षी, सुदास, दशरथ, जनक, कैकेय, लक्ष्मण, भरत, क्षत्रुघ्न, एर ब्राहमण,पिङ्गल ब्राहमण, कुण्डल मण्डित, भामण्डल, सीता, मलेच्छो का आगमन, चन्द्रगति विद्याधर, सुप्रभा रानी, उपास्ति गृहस्थ, सिंहदोर, कल्याणमाला, कपिल ब्राहमण, वनमाला, अतिबीर्य, जितपद्या, देशपूषणकुलभूषण, मुनि, उदित औरमुदित, अग्नि प्रवेश, चन्द्रनखा, यक्षदत्त, बिनयदत्त, आत्मश्रेय, चन्द्रलेखा, गिरि और गोभूति, हस्त-प्रहस्त, नल-मील, अंगद, चन्द्रप्रतिभ, विशल्या, इन्द्रजीत और मेघवाहन के पूर्व भव, मंदोदरी के पूर्व भव, अभिमाना, श्रीवर्धित तथा उसकेपरिवार के पूर्व भव, त्रिलोक मण्डन हाथी, सूर्योदय और चंद्रोदय, अचल अर्हदत्त सेठ, मनोरमा, कनकमाला के विवाह, राम, लक्ष्मण, सीता और रावण के पूर्व भाव , सीताजी की अग्नि परीक्षा, मधु कैटभ, लक्ष्मण के पुत्र, सीतेन्द्र द्वारा रावण औरलक्ष्मण के जीव को संबोधन, रावण और लक्ष्मण के आगामी भव तथा सीता के आगामी भव की कथायें कहीं गई है ये सभी कथाएँ जैन साहित्य की बहुमूल्य निधि है। इनसे प्रेरणा प्राप्त कर मनुष्य ऐहिक और पारलौकिक अभ्युदयो की सिद्धि कर सकता है।1 अत: इनका साहित्य में अत्यधिक योगदान है।

जैन रामायणों का साहित्य में योगदान

हमारे अध्ययन ग्रंथ में विमलसूरि की पउमचरिय, रविषेण की पद्मपुराण एवं स्वयंभू की पउमचरिउ - ये क्रमश: प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश भाषा में लिखी हुई जैन रामायण हैं। इनकी भाषा अपने-अपने काल की प्रसिद्ध व सर्वपरिचित भाषा रही है। इसकी शैली सरल प्रवाहमयी और शांत है। ये मंगलाचरण तथा वस्तु निर्देशपूर्वक प्रारंभ होता है। इसमें अनेक पर्व हैं। वन, पर्वत, नदियों तथा ऋतुओ आदि के प्राकृतिक दृश्यों, जन्म,

विवाहादि, सामाजिक उत्सवों एवं रसों, श्रृंगारात्मक हाव भावविलासों तथा सम्पत्ति, विपत्ति में सुख-दुख के उतार चढाव का कलात्मक हृदयग्राही चित्र इनमें उपस्थित है।2

स्थान-स्थान पर धार्मिक उपदेश मुनियों व गृहस्थो के द्वारा दिये गये हैं। साथ ही उक्त वर्णित चरित्रों की कथाओं का समावेश करने से कथा का महत्त्व और अधिक बढ गया है व शैली प्रभावशाली बन गई है। ये सभी कथायें नियत समय पर नियतढंग से प्रारंभ होती है व नियत समय पर आकर समाप्त हो जाती हैं। इनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन ही नहीं है इनका उद्देश्य है मनोरंजन के साथ साथ कथा को रोचक बनाना और धार्मिक व सामाजिक उपदेश देना। ये पूर्ण रूप से नैतिकता व धार्मिकताकी ओर झुकी हुई है। स्वार्थपरक इच्छाओं का त्याग, सार्वभौम क्रियाशील, परोपकार की भावना, कल्याण से युक्त आकर्षक दर्शन का वर्णन, व्याख्यान और उपदेश इसका प्रधान ध्येय है।3 इनके अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि प्राणियों के कर्म फलों को दिखलाने में जैन रामायणों में आचार्यो ने विशेष रूचि दिखाई है। उनके सामने केवल नैतिकता का शुल्क; आदर्श नहीं था। अत: हमें इन कृतियों का साहित्य में योगदान स्पष्ट करने के लिये इनके भाव पक्ष एवं कला पक्ष को देखना पडेगा, क्योंकि काव्य की आत्मा 'भाव' है और काव्य की देह 'कला' है। भाषा हमारे मन के भाव और विचारों का माध्यम है। इससे काव्य में यदि भाषा सशक्त न हुई तो लेखक या कवि अपने मन के भाव या विचार पाठकों तक पहुँचाने में असमर्थ होते हैं। यही कारण है कि आचार्य विमलसूरि, रविषेण एवं स्वयंभूने अपने अपने काल के सापेक्ष प्रचलित भाषाओं में काव्य की रचना की। किसी कवि ने ठीक ही कहा है :

“किं वा कवितया राजन। किं वा वनितया तथा
पद-विन्यास- मात्रेण मनः नापहृतं तथा।”

अर्थात् कवि का सुंदर पद विन्यास (शब्द-रचना और वनिता के सुन्दर पद-विन्यास पद की चाल) से किसका मन आकर्षित नहीं होता।4

यही कारण है कि अपने काल एवं समय के सापेक्ष आचार्य विमलसूरि ने प्राकृत, स्वयंभू ने अपभ्रंश व रविषेण ने संस्कृत भाषा का उपयोग किया, क्योंकि काव्य की कसौटी ही भाषा है। भाषा यदि समय सापेक्ष न हो तो वह रचना सिर्फ रचना बनकर रह जाती है। लोकप्रिय रचना तो वह तब ही बन पायेगी जब वह पाठकगण को प्रिय लगे और ऐसा भाषा के समय सापेक्ष होने पर ही होगा।

अपने वर्णनों में भाषा की जटिलता को दूर करने के साथ-साथ वे अपनी प्रतिभा तथा भाषा पर अधिकार प्रदर्शित करने के लिए उद्यत रहते थे। उनका उद्देश्य अभिव्यक्ति की यथार्थता तथा अर्थ की स्पष्टता है। प्राय: बड़े-बड़े समास का तीनों ने ही प्रयोग नहीं किया है। इनकी शैली साधारण काव्य की उत्कृष्ट शैली कही जा सकती है। वे कर्णकटु ध्वनियों तथा अत्युक्ति अथवा शब्दाडम्बर से भी बचना चाहते हैं। अलंकारों की अपेक्षा अर्थ पर अधिक ध्यान दिया गया है। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि इनमें अलंकारों का उपयोग ही नहीं हुआ है। इनमें अलंकारों का उपयोग भी पर्याप्त मात्रा में हुआ है।5 अनुप्रास, गोता, रूपक, श्लेष आदि अलंकारों का भण्डार है। मरूदेवी का वर्णन करते हुए उत्प्रेक्षा का सहारा लेकर रविषेण कहते है

“वह (मरूदेवी) दूसरे के मनोगत भाव को समझने वाली थी, इसलिए ऐसी जान पड़ती थी, मानो आत्मा से ही उसके स्वरूप की रचना हुई हो। उसके कार्य तीनों लोकों में व्याप्त थे इसलिए

ऐसी जान पड़ती थी मानो मुक्त जीव के समान ही उसकास्वभाव था।"6 राजा श्रेणिक का श्लेषमयी वर्णन करते हुए कवि कहता है “हरि अर्थात् विष्णु की चेष्टायें तो वज्रघाती अर्थात् वृषानुसार को नष्ट करने वाली थी पर उसकी चेष्टायें वृषघाती अर्थात् धर्म का घात करने वाली नहीं थी। इसी प्रकार महादेवजी का वैभव दक्ष वर्गतापि अर्थात् राजा दक्ष के परिवार को संताप पहुँचाने वाला था परन्तु उनका वैभव दक्ष वर्गतापि अर्थात् चतुर मनुष्यों के समूह को सन्ताप पहुंचाने वाला नहीं था।7

स्त्री सौन्दर्य का चित्रण

स्त्री के रूप सौदर्य का चित्रण कवियों ने बहुत खुलकर किया। स्वयंभू ने तो किसी भी स्त्री के परिचय में इतना उतार-चढाव दिया है कि पढ़कर एक सुन्दर स्त्री की कल्पना हो आती है। उन्होंने स्त्रियों की सुन्दरता में अंजना, वनमाला, कल्याणमाला, कैकेयी, सीता आदि का विशेष रूप से चित्रण किया है। साथ ही जब ये दुखी होती है तो इनके रूप सौन्दर्य पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका भी स्थान-स्थान पर वर्णन मिलता है। 'पउमचरिउ' में प्रवास से लौटने पर पवनंजय अंजना-सुंदरी को न पाकर उसके रूप लावण्य का बखान कर विह्वल हो जाता है। वियोगी पवनंजय वन में प्रवेश करता है और वन्य जीवों से पूछता है “अरे हंसों के अधिराज हंस! बताओ यदि तुमने रस हंस गति ललना को कहीं देखा है ? हे दीर्घ नखवाले सिंह! क्या तुमने उस नितम्बिनी को कहीं देखा है ? हे गज! कुंभ के समान स्तनों वाली को क्या तुमने देखा है ? अहो अशोक! पल्लवों के समान हाथ वाली को क्या तुमने देखा है ? हे कोकिल! वह कोकिल वाणी कहाँ गई ? हे सुंदर चन्द्र! वह चन्द्रमुखी कहाँ है ? हे मृग! क्या तुमने उस मृग नयनी को देखा है ? अरे मयूर! तुम्हारे कपाल की तरह बालों वाली को क्या तुमने देखा है ? क्या वह विरह विधुरा तुम्हें दिखाई नहीं दो ?”8

प्रकृति का मानवीकरण

मानवीकरण अलंकार के लिये कवि ने प्रकृति को मानवीय रूप देने में कवि ने अपनी प्रतिभा तथा काल्पनिक शक्ति का परिचय दिया है - “वह नर्मदा तरंग रूपी भृकुटी के विलास से युक्त थी, आवर्त रूपी नाभि के सहित थी, तैरती हुई मछलियाँ जैसी उसके नेत्र थे, दोनों विशाल तट ही स्थूल नितम्ब थे, नाना फूलों से वह व्याप्त थी और निर्मल जल ही उसका वस्त्र था। इस प्रकार वह उत्तम नायिका के समान थी ऐसी नर्मदा को देख रावण महाप्रीति को प्राप्त हुआ।9

जब भरत का चक्र अयोध्या के भीतर नहीं गया तो कवि उपमाएँ देता है :

जिह अवुहणभन्तरे सुकई -वयणु।
(जिस प्रकार अज्ञानी में सुकवि की वाणी)
जिह वम्भयारि-मुहें काम सन्थु।
(जिस प्रकार ब्रहमचारी के मुख में कामशास्त्र)
जिह सम्भदसण दूर भत्यें।
(जिस प्रकार दूर भव्य में सम्यग्दर्शन)
जिह जीवदयावरू पाव-कर्म।
(जिस प्रकार पापक्रर्म में उत्तम जीव दया)
पढ़मं-विहत्तिहें तत्पुरुष जैम।
(जिस प्रकार अयोध्या में चक्र रत्न प्रवेश नहीं कर सकता)
ण-पई सइ उज्झहे चक्कु लेम
(उसी प्रकार अयोध्या में चक्र रत्न प्रवेश नहीं कर सका)

महाकाव्यों में रस

तीनों ही महाकाव्यों में नौ रसों : श्रृंगार, वीर, करूण, हास्य, भयानक, वीभत्स, अद्भुत , शांत

और वात्सल्य रस का स्थान-स्थान पर पूर्ण रूप से प्रयोग किया है। श्रृंगार रस में विशेष रूप से स्त्री के रूप सौन्दर्य का वर्णन मिलता है। जैसे राम-सीता के वियोग में दुखी ही विलाप करते हैं "अरे मेरी कामिनी की तरह सुन्दर गति वाले गज, क्या तुमने मेरी मृगनयनी को देखा है, कहीं यह नीलकमलों को अपनी पत्नी के विशाल नयन समझ बैठते हैं, कहीं हिलते हुए अशोक वृक्ष को वे यह समझ लेते हैं कि सीता देवी की बाँह हिल-ढुल रहीं है।"10

पद्मपुराण के 12वें पर्व में रावण और इन्द्र के बीच हुए युद्ध में योद्धाओं की वीरता देखते ही बनती है अर्थात् वीर रस को स्थान-स्थान पर योद्धाओं की वीरता दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया है :

"किसी योद्धा की भुजा आलस्य से भरी थी (उठती ही नहीं थी) पर जब शत्रु ने उसमें गदा की चोट मारी तब वह क्षण भर में नाच उठा और उसकी भुजा ठीक हो गई।"11

कटु वचनों से आहत वह दूत क्रोध के साथ रावण के पास गया और बोला "क्या अधिक कहूँ बाली तुम्हें एक तृण के समान भी नहीं समझता, यह वचन सुनकर रावण समुद्र गर्जना के समान तीखे स्वर में बोला, मैं अपने पिता रत्नाश्र्व के चरण छूने से रहा, किन्तु मेरी प्रतिज्ञा है कि युद्ध में बाली का मान मर्दन अवश्य करूंगा। यह प्रतिज्ञा करके वह तेजी से चल पड़ा, मानो कोई क्रूर गृह विरूद्ध में उठ खडा हो। वह सुन्दर पुष्प विमान में ऐसे बैठ गया जैसे शिवालय में सिद्ध स्थित होते हैं। उसने अपने हाथ में चन्द्रहास खड्ग ले लिया, उसकी ऐसी चमक उठी मानों बादलों में बिजली चमकी हो। नगर-परमेश्वर रावण के निकलते ही वीर पल के भीतर युद्ध के लिए निकल पडे।"12

हास्य रस नव रसों के अन्तर्गत स्वभावत: सबसे अधिक सुखात्मक होता है। इसकी उत्पत्ति श्रृंगार रस से मानी गयी है। इसका अच्छा उदाहरण उस समय प्रस्तुत होता है। जब सीता दर्पण में अपना मुख देखती रहती है व नारद को गुनिवेश मेंदेखकर वह डर जाती है। यह प्रसंग पढकर पाठकों को हँसी आती है।

सूर्य अपना और घोडे जोतकर एक योजन भी मुश्किल से पहुंचा कि तब तक बाली मेरी की प्रदक्षिणा देकर और जिनवर की वंदना करके उतने ही समय में वापिस आ गया। कितनी तेजगति है ।13 यह अदभूत रस का उदाहरण है ।

शांत रस तो पूरे काव्य में भरा पड़ा है। भोग से त्याग की ओर मनुष्य की वृत्तियों को उन्मुख कराने के लिए ही ग्रंथ लिखे गये हैं। आत्मशुद्धि' ही जीवन का मूलमंत्र और मूल लक्ष्य होना चाहिये जिस प्रकार ईंधन से अग्नि तृप्त नहीं होती और जल से समुद्र तृप्त नहीं होता उसी प्रकार जब तक संसार है तब तक सेवन किये हुए विषयों से यह प्राणी तृप्त नहीं होता।14 यह शांत रस का अच्छा उदाहरण है।

भयानक रस का उदाहरण देखिये. "भरतेश्वर और बाहुबली की सेनाएँ भिड़ गयी, कोलाहल होने लगा, रथ हांक दिये गये, हाथी प्रेरित किये जाने लगे। लगातार अस्त्र छोड़े जाने लगे। जीर्णजोतें (रथों की) कट गयी, धुरे टुकडे-टुकडे हो गये, उर टुकडे-टुकडे हो गये, भुजाएँ कट गयी,सिर गिरने लगे, कंधे कांपने लगे, कबन्ध नाचने लगे।15

रौद्र रस का तो रावण पर मानो निखार ही आया है। युद्ध के समय वह और अधिक प्रकट होता है। शत्रु पक्ष की प्रशंसा सुन कर उसके (रावण के) दसों सिर जैसे आग से भड़क उठे। पवन से प्रदीप्त आग की भाँति उनसे सैकडों ज्वालायें फूट

पड़ी। उसकी आँखे लाल हो गयीं, होंठ फड़क रहे थे, वह दोनों हाथ मल रहा था, गाल हिल-डुल रहे थे, भौहें टेढी थी और वह धरती को पीट रहा था।16

निष्कर्ष

इस प्रकार योद्धा का रक्त रंजित होना, मांस, रक्त, मरना आदि में वीभत्स रस होता है। छंद योजना की दृष्टि से 'पउमचरिउ' में प्रमुखत: कड़वक छंद का प्रयोग किया गया है।17 पद्मचरित्र में मुख्य रूप से अनुष्टुप छंदों में श्लोक लिखे गये हैं। इनके अतिरिक्त इनमें अनेक स्थानों पर अन्य छंदों का भी प्रयोग हुआ है। इस प्रकार जैन रामायणों, पदूमपुराण, पउमचरिउ एवं पउमचरियं का जैन साहित्य में अत्यधिक योगदान है। ये सभी जैन साहित्य के पुराण है। इनका हिन्दी अनुवाद उपलब्ध होनेके कारण यह जैनियों के घर-घर में पढा जा सकता है। वास्तव में ये ग्रंथ जैन साहित्य की अनमोल धरोहर है जो युगों-युगों तक इसी तरह पूजनीय माने जायेंग।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 पद्मचरित और उसमें प्रतिपादित संस्कृति पृष्ठ 294
2 पद्मचरित और उसमें प्रतिपादित संस्कृति पृष्ठ14
3 पद्मचरित और उसमें प्रतिपादित संस्कृति पृष्ठ 15
4 रामकथा-स्वयंभू और तुलसी : एक अवलोकन पृष्ठ 57
5 रामकथा-स्वयंभू और तुलसी : एक अवलोकन पृष्ठ 57
6 पद्म पुराण 3/97
7 पद्म पुराण 2/61
8 पउमचरिउ - 19/13/3-9
9 पद्म पुराण 15/17
10 पउमचरिउ भाग 3 पृष्ठ 135
11 पद्म पुराण 12 /274
12 पउमचरिउ 12/7/1-7
13 पउमचरियं 12/1/9
14 पउमचरिउ 83/52
15 पउमचरिउ 10/12
16 रामकथा-स्वयंभू और तुलसी : एक अवलोकन पृष्ठ 54
17 रामकथा-स्वयंभू और तुलसी : एक अवलोकन पृष्ठ 60